Peer Reviewed/ Refereed Journal
ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157
Received on 9th July 2019, Revised on 11th July 2019; Accepted 19th July 2019

आलेख

वैदिक साहित्य में जल संस्कृति

* डॉ. कचंन शर्मा
व्याख्याता, बु.शि.प्र.म.सीटीई,
आईएएसई मानित विश्वविद्यालय, गा.वि.मं., सरदारशहर
मेल– drkanchansharma.srdr@gmail.com

मुख्य शब्द - *शिक्षक–प्रशिक्षण, आधुनिकीकरण, द्विवर्षीय बी.एड. स्नातक उपाधि आदि।*

तपाम्यहमहं वर्ष निगृध्नम्युत्सृजामिच।

अमृतं चैव मृत्युश्य सदसच्चाहमर्जुना।।

हे अर्जुन! मै ही अमृत और मृत्यु हूँ और सत् और असत् भी में ही हूँ। में ही सूर्य में तपता हूँ, वर्षा का आकर्षण करता हूँ और उसे बरसाता हूँ। सृष्टि का अमृत जल है। यही अमृत जीवन के विविध पहलुओं को प्रभावित भी करता है। अमर कोश में ''पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं बनं'' इस श्लोक में पानी का नाम अमृत बताया है।

''अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'' ''अमृतापिधान्मसि स्वाहा'' इन श्रुति वचनों में जल को अमृत की समता दी गई है। अथर्ववेद में पानी को सब रोगों की दवा माना गया है। '' अप्सुमेंसामोडत्रवीदन्त विश्वानि भेषजं'' अमृत का अर्थ समुद्र मंथन से निकले जल कलश से लिया जाता है जिसे पीने से व्यक्ति अमर हो जाता है लेकिन पृथ्वी पर जल ही अमृत तुल्य है जिसके बिना इस पृथ्वी पर किसी का भी जीवन संभव नहीं है। वैदिक वाड़मय में मनु महाराज लिखते है, कि ब्रह्मा ने जल में सृष्टि का बीजवपन किया। ''अप एवं ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्'' जल को विधाता की प्रथम सृष्टि माना जाता है

इन्द्र व अग्नि के बाद देवताओं में वरूण देवता का वर्णन 12 सूक्तों में ऋक्सूक्त में किया गया है। यह विश्व का राजा, सम्राट व प्रशासक है। यह नियमों का संचालक है। वरूण देवता जनता के पाप–पुण्यों तथा सत्य–असत्य का हिसाब रखता है। वरूण अपनी शक्ति से देवताओं को बांध लेता है। नियम भंग करने वालों को कठोर दण्ड देता है उसके प्रति आत्मसमर्पण करने वालों को वह क्षमा कर देता है। वरूण देवता को इसीलिए 'धृतव्रत' कहा जाता है। मैकडोनल के अनुसार ''वरूण का रूप चारों और फैले हुए आकाश से आच्छादित है। पुराणों में वरूण को जल का देवता कहा गया है। वरूण देवता ने ही जल में अग्नि को, आकाश में सूर्य को, चट्टानों या पर्वतों पर सोम को रखा यह जल का नियन्त्रण और व्यवस्थापन करने वाला है। ऋग्वेद में अपस् देवता को चार सूक्तों में संबोधित किया गया है। इसका प्रयोग बहुवचन में होता है। अपस् देवता का वर्णन माता, स्त्री और अधि ठात्री के रूप में मिलता है देवराज इन्द्र ने जलो के लिए मार्ग का खनन किया ये उसी मार्ग में देवताओं के पास रहते है, मित्र, वरूण, और सूर्य उसके साथी है ये मनुष्यों के पाप, पुण्य पर दृष्टि रखते है। जल के दो भेद है 'दिव्य और सोम' इन दोनों का ही गन्तव्य स्थान समुद्र है। जल से सरसता पाकर संसार गति करता है। जल गन्दगी को दूर कर पवित्र करता है। जल विभिन्न रोगों से मुक्ति प्रदान कर स्वस्थ बनाता है। जल आचरण संबंधी मलिनता, बलपूर्वक किये गये पाप व रोगों को दूर कर स्वास्थ्य धन, शक्ति, दीर्धायु एवं अमरत्व प्रदान करता है।

इदमापःप्रवहत यत् किं च दुरितं मयि

यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेष उतानृतम्।। (ऋग्वेद 10.2.8)

हे जल देवता! मुझसे जो भी पाप हुआ हो उसे तुम दूर बहा दो अथवा मुझसे जो भी द्रोह हुआ हो, मेरे किसी कृत्य से किसी को पीड़ा हुई हो अथवा मैने किसी को गालियाँ दी हों, अथवा असत्य भाषणं किया हो, तो वह सब भी दूर बहा दो।

जल में अखण्ड प्रवाह, दया, करूणा, उदारता, परोपकार और शीतलता ये सभी गुण विद्यमान रहतें है। मनुष्य कितना भी दुःखी क्यों न हो, ठण्डे जल से स्नान करते ही वह शान्त हो जाता है। जल ही जीवन है, जल ही पूजा पद्दति का आधार विसर्जन है। 'रूप रसस्पर्शवव्य आपोद्रवाः स्निग्धाः।। 2।। (वैशेषिक दर्शन) वैशेषिक दर्शन के द्वितीय अध्याय में जल तत्व में रूप, रस, और स्पर्श इन तीन गुणों का समावेश बताया गया है। स्निग्ध होने के साथ–साथ प्रवाहित भी होता है और प्रगटस्वरूप होने के कारण रूपवान भी है मुख में लेने पर खारा, मीठा आदि स्वाद का ज्ञान भी होता है। इसी कारण यह रसयुक्त है।

आपोऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्तु यृतेन नो धृतप्वः पुनन्तु।

विश्व हि रिप्रवहन्ति देवीरूदिदाश्यः शुचिरापूतऽएमि।।

दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां

परिदधे भद्रं वर्णम् पु यन् – यजुर्वेद, 4, 211

अर्थात मनुष्य को चाहिए कि जो सब सुखों को देने वाला, प्राणों को धारण करने वाला तथा माता के समान, पालन–पोषण करने वाला जो जल है उससे शुचिता को प्राप्त कर, जल का शोधन करने के पश्चात् ही, उसका उपयोग करना चाहिए, जिससे देह को सुन्दर वर्ण, रोग मुक्त देह प्राप्त कर, अनवरत उपक्रम सहित, धार्मिक अनुष्ठान करते हुए अपने पुरूषार्थ, अनवरत उपक्रम सहित धार्मिक अनुष्ठान करते हुए, अपने पुरूषार्थ से आनन्द की प्राप्ति हो सके।

वैदिक ऋषियों ने वैज्ञानिकों की तरह जल एवं वायु को प्रदूषण मुक्त करने की बात कही है। वर्षा के जल को किस प्रकार औषधीयगुण युक्त किया जाये इसका उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है।

''अपो देवीरूपसृज मधुमतीरयक्ष्मार्य प्रजाभ्यः।

तासामास्थानादुज्जिहतामोषध्यः सुपिप्पलाः।। – यजुर्वेद 11/38

अर्थात राजा के पास दो तरह के वैध होने चाहिए। एक वैध सुगन्धित पदार्थो के होम से, वायु, वर्षा जल एवं औषधियों को शुद्ध करें। दूसरा श्रेष्ठ विद्वान, वैध बनकर प्राणियों को रोग–रहित रखे। '' सर्वेभवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामया'' हमारे ध्येय आदर्श वाक्य का निर्वाह करें

वेद में मानव को कृषि आधारित जीवन वाला बताया गया है। इसीलिए जल स्त्रोंतो से मानव का स्नेहपूर्ण संबन्ध रहा है। नदियों को हम देवी स्वरूपा माता मानते है और उनकी पूजा एवं आराधना करते है। 'ऋग्वेद' की इस ऋचा में गुप्त रूप से बहने वाली सरस्वती की महिमा का गुणगान किया गया है।

''अम्बित में नदीत में देवित में सरस्वति।

अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमां बनस्कृधि।। ऋग्वेद 2/8/14

हे माता सरस्वती! तू सर्वोतम नदी समान है। जिन नदियों का प्रवाह प्रकट है, वे गंगा यमुना जैसी श्रेष्ठ नदियां है, परन्तु तेरा प्रवाह गुप्त है, इसलिए तू श्रेष्ठतम् है तू सभी देवताओं में श्रेष्ठ, प्रकाश को देने वाली है। हमारा जीवन अप्रशस्त जैसा बन गया है। है माता! तू उसे प्रशस्त कर। हम उपेक्षित है, निन्दित है। हे माता! तू हमारा पथ प्रशस्त कर।

'यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्न कृष्टयः संबभूवः

यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्व पेय दधातु।।' – अथर्ववेद/द्वादश–काण्डम् (3)

सागर, नदी कुआँ और वर्षा के जल से मनुष्य कृषि कार्य जहाज, नाव, यंत्र आदि का विधेयात्मक प्रयोग करता है। वह सबको आनन्द्र प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी श्रेष्ठ पद को प्राप्त करता है। वराह मिहिर ने अपने प्रसिद्ध 'वृहत्संहिता' में भू–जल

की खोज और उसके उपयोग के बारे में 125 सूत्र प्रस्तुत किये है। वराहमिहिर ने धरती पर मौजुद विभिन्न लक्षणों और उन लक्षणों को पैदा करने में पानी की भूमिका को समझ कर पानी की उपलबता पर सटीक भविष्यवाणी की जा सके ऐसा सूत्रों में वर्णन किया है। 600 मीटर की गहराई तक मिलने वाले पानी के संकेतो को समझाने के लिए वृहत्संहिता सूत्र 54.6 एवं 54.7 में लिखा हे '' जल विहीन क्षेत्र में यदि बेंत का वृक्ष दिखाई दे तो उस वृक्ष के पश्चिम में तीन हाथ (4.5 फीट या 53 ईच) दूर डेढ़ पुरूष (एक पुरूष बराबर पांच हाथ या 7.5 फीट) की गहराई पर पानी मिलेगा'' इस निष्कर्ष का आधार, पश्चिमी शिरा है जो पानी मिलने वाले स्थान से बहती है। अगले सूत्र में बताते है कि आधा पुरूष खुदाई करने पर हलके पीले रंग के मेढ़क मिलेगे, उसके बाद पीले रंग की मिट्टी ओर उसके बाद सपाट परतदार पत्थर के 11.25 फीट की गहराई पर पानी मिलेगा।

भारत में जल संचय की परंपरा पर प्रमाणिक दस्तावेजीकरण सेन्टर फोर साईस एण्ड इनवायर्मेट (सी.एस.ई.) नई दिल्ली के सुनीता और अनिल अग्रवाल ने किया जिसमें विभिन्न स्थानों पर जल संग्रहण, संवर्धन प्रबन्धन और उसके शुद्धीकरण का उल्लेख मिलता है।

महाभारत काल में ब्रह्म सरोवर, कर्णझील, शुक्रताल, सिन्धुघाटी सभ्यता में विशाल स्नानागार और जल संग्रहण का उल्लेख मिलता है। तोमर वंश में अर्द्धचन्द्राकार सूरजकूण्ड, सम्राट अशोक द्वारा तीन तालाबों का निर्माण करवाया गया जो दो पहाड़ो पर व एक पहाड़ के मध्य में 500 मीटर की दूरी पर एक के बाद एक तालाब भरता था। भोपाल में राजाभोज ने 11 वीं सदी में भारत का सबसे बड़ा जलाशय बनवाया था इस तालाब में सीमेन्ट चूना पत्थर आदि किसी भी जोड़ने वाले पदार्थ का प्रयोग नहीं किया गया। इस जलाशय की साइट दो पहाड़ियों के बीच, न्युनतम दूरी के आधुनिक सिद्धान्त पर आधारित थी। इसके अवशे ा भोजपुर मन्दिर के पास देखे जा सकते है।

निष्कर्ष

बारिश की एक–एक बूंद कीमती है। इन्हें सहेजना बहुत ही आवश्यक है । यदि अभी पानी नहीं सहेजा गया तो संभव है कि पानी केवल हमारी आँखो में ही बच पायेगा। हमारा देश वह देश है, जिसकी गोदी में हजारों नदियाँ खेलती थी, किन्तु आज वे नदियाँ हजारों में से केवल सैकड़ो में ही बची है। वे सब नदियाँ कहां गई, कोई नहीं बता सकता। नदियों की बात छोड़े तो हमारे गांव, गली, मोहल्ले में तालाब, कुएं पोखर, बावड़ी सब गायब हो गये। जल मन्दिर, प्याऊ, पक्षियों के लिए पानी के परिण्डे, पशुओं के लिए खेल (पानी की टैंक) आदि की परंपराये धीरे–धीरे कम हो रही है। अतः साहित्यिक सामाजिक, सरकारी और व्यक्तिगत प्रयास करते हुए हमें जिम्मेवारी पूर्वक जल–सम्पदा का संरक्षण करना है, ताकि वह सवंर्धित हो सके। मानव जीवन का संकट टल सके।

जल संपदा संवर्धन हेतु उपाय

1. वैदिक साहित्य संरक्षण
2. परंपरागत जल स्रोतो व संग्रहण केन्द्रों की सार संभाल
3. सरकारी प्रयास/ जागरूक नागरिकों द्वारा देखभाल
4. परंपरागत जल विरासत के वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व से समाज को अवगत करवाना
5. बरसाती जल का संग्रहण व सदुपयोग
6. नदियों को जोड़कर पूरे देश में जल प्रवाह
7. पर्यावरण के अनुकूल बांध व एनीकट का निर्माण
8. प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबन्ध
9. जलवायु व भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार जल संरचना निर्माण
10. जल प्रबन्धन, संरक्षण पर कार्यशाला व सेमीनार का आयोजन
11. पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रारंभिक से उच्च स्तर तक जल संग्रहण एवं जल विरासत संरक्षण की जानकारी देना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. शर्मा, आचार्य श्रीराम 'जीवन देवता की साधना आराधना', प्रकाश अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा पृ.स. 629
2. शास्त्री डॉ. हरिदत, डॉ. कृष्ण कुमार 'ऋसूक्त संग्रह' पृ.स. 23.14
3. चतुर्वेदी डॉ. वासुदेवकृष्ण 'वैदिक सूक्त रत्नावती' महालक्ष्मी प्रकाशन पृ.स. 47.148
4. लोक वार्ता, लोक मानस, लोक साहित्य पृ.स. 8
5. कन्हैयालाल सहल ' राजस्थानी साहित्य संस्थान, यू.आई. टी. के पास जोधपुर 1994
6. पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स, एनवायरमेंट एनर्जी फाउडेशन प्रकाशन जनवरी 2018 से सितम्बर 2018 तक मासिक पत्रिका
7. महामिडिया मासिक पत्रिका मार्च 2018
8. नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस गोरखपुर
9. सुजस, राजस्थान प्रकाशन, जल प्रबन्धन 425
10. विकीपिडिया जलसंरक्षण

**** Corresponding Author:***

डॉ. कचंन शर्मा, *व्याख्याता, बु.शि.प्र.म.सीटीई,*

आईएएसई मानित विश्वविद्यालय, गा.वि.मं., सरदारशहर

मेल– drkanchansharma.srdr@gmail.com